क्या तुममें से किसी ने कोई सपना देखा है? फिर अल्लाह जिसे चाहता, वह आपके सामने अपने स्वप्न बयान करता। एक दिन सुबह के समय आपने हमसे कहा : आज रात मेरे पास दो व्यक्ति (फ़रिश्ते) आए और बोले : चलो। चुनांचे मैं उनके साथ चल पड़ा।

समुरा बिन जुन्दुब -अल्लाह उनसे प्रसन्न हो- कहते हैं कि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- प्रायः अपने सहाबा से फ़रमाया करते थे कि क्या तुममें से किसी ने कोई सपना देखा है? फिर अल्लाह जिसे चाहता, वह आपके सामने अपना स्वप्न बयान करता। एक दिन सुबह के समय आपने हमसे कहा : “आज रात मेरे पास दो व्यक्ति (फ़रिश्ते) आए और बोले : चलो। चुनाँचे मैं उनके साथ चल पड़ा। हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहाँ एक व्यक्ति लेटा हुआ था और दूसरा व्यक्ति एक बड़ा-सा पत्थर लेकर उसके पास खड़ा था। वह पत्थार लेकर उसकी ओर बढ़ता और उसके सिर को फड़ देता। जब पत्थर लुढ़ककर दूर चला जाता, तो वह पत्थर के पास जाकर उसे उठा लाता और उस व्यक्ति के पास आता। इतने में उसका सिर दाबारा पहले जैसा हो चुका होता था। चुनाँचे, वह जो कुछ पहले किया था, उसे फिर से दोहराता था।" नबी –सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- फ़रमाते हैं कि मैंने उन दोनों से पूछा : "अल्लाह की ज़ात पवित्र है! यह दोनों कौन हैं?" फ़रिश्तों ने कहा : अभी आगे चोल, अभी आगे चलो। "चुनाँचे हम चल दिए। फिर हम एक एसे व्यक्ति के पास पहुँचे, जो गुद्दी के बल चित लेटा हुआ था और एक व्यक्ति लोहे का अंकुड़ा लेकर उसके पास खड़ा था। वह उसके चेहरे के एक भाग में अंकुड़ा रखता और उसके जबड़े को गुद्दी तक फाड़ देता। फिर उसके नथने को गुद्दी तक तथा उसकी आँख को गुद्दी तक फाड़ देता। फिर चेहरे के दूसरे भाग की ओर जाता और उसके साथ भी वही करता, जो पहले भाग के साथ किया था। वह जब तक इस भाग का काम संपन्न करता, पहला भाग पूर्व की भाँति सही हो जाता। अतः, वह फिर से उसे फाड़ना शुरू कर देता।" आप –सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- फ़रमाते हैं : यह देख मैंने कहा : "अल्लाह की ज़ात पवित्र है! यह दोनों कौन हैं?" फ़रिश्तों ने कहा : अभी आगे चलो, अभी आगे चलो। "चुनाँचे, हम चल दिए। फिर हम तंदूर जैसी एक वस्तु के पास पहुँचे।" वर्णनकर्ता कहते हैं : मुझे लगता है कि आपने फ़रमाया था : "वहाँ से हमें बड़ी चीख़ और पुकार सुनाई दी। हमने झाँककर देखा, तो उसमें नग्न पुरूष और महिलाएँ थीं। जब उनके नीचे से आग की लपटें आती थीं, तो वे सहायता के लिए फ़रियाद करने लगते। मैंने कहा : यह कौन लोग हैं? दोनों ने मुझसे कहा : अभी आगे चलो, अभी आगे चलो। चुनाँचे हम चल पड़े। यहाँ तक कि एक नहर के पास पहुँचे।" वर्णनकर्ता कहते हैं : मुझे लगता है कि आपने फ़रमाया था: “नहर लहू की तरह लाल थी और उसमें एक व्यक्ति तैर रहा था और एक व्यक्ति नहर के किनारे बैठा था, जिसके पास बहुत-से पत्थर जमा थे। जब तैराक तैरकर उसके पास आता, तो अपना मुँह खोल देता और किनारे में खड़ा व्यक्ति उसके मुख में एक पत्थर डाल देता। फिर वह तैरने लगता। फिर लौटकर उसके पास आता और मुँह खोल देता, तो पत्थरों के पास खड़ा व्यक्ति उसके मुँह में एक पत्थर डाल देता। मैंने फ़रिश्तों से कहा : यह दोनों कौन हैं? दोनों ने कहा : अभी और आगे चलो, अभी और आगे चलो। फिर हम चल पड़े और एक ऐसे व्यक्ति के पास पहुँचे, जो अत्यंत बदसूरत था। तुमने उससे अधिक बदसूरत व्यक्ति नहीं देखे होगा। मैंने देखा कि उसके पास आग जल रही है, जिसे वह जला रहा है और उसके चारों ओर चक्कर लगा रहा है। मैंने पूछा : यह कौन है? दोनो

वह वहीं लौट जाता, जहाँ पहले था।" उसमें आगे है : "दोनों फ़रिश्ते मुझे लेकर पेड़ पर चढ़ गए और मुझे एक ऐसे घर में दाख़िल किया, जिससे सुंदर घर मैंने कभी नहीं देखा था। उसमें बहुत-से बूढ़े और जवान मौजूद थे।" उसमें और आगे है : “जिसे आपने इस अवस्था में देखा था कि उसके जबड़े को फाड़ा जा रहा था, तो वह एक झूठा व्यक्ति था, जो झूठी बात बोल देता था, जो उससे निकलकर चारों दिशाओं में फैल जाती थी। आपने उसके साथ जो कुछ होते देखा है, वह उसके साथ क़यामत के दिन तक होता रहेगा।" उसमें और आगे है : “जिसको आपने इस अवस्था में देखा था कि उसके सिर को फोड़ा जा रहा है, तो वह ऐसा व्यक्ति था, जिसे अल्लाह ने क़ुरआन सिखाया था, लेकिन वह रात को उससे निश्चेत होकर सोता रहा और दिन में भी उसपर अमल नहीं किया। अतः, जो आपने उसके साथ होते देखा, वह क़यामत के दिन तक जारी रहेगा। इसी तरह पहला घर, जिसमें आप प्रवेश किए थे, वह साधारण ईमान वालों का धर है और यह घर शहीदों का घर है। मैं जिबरील हूँ और यह मीकाईल है। अब आप अपना सिर ऊपर करके देखें। मैंने सिर ऊपर करके देखा, तो मुझे अपने ऊपर बादल की तरह नज़र आया। दोनों ने कहा : यह आपका घर है। मैंने कहा : मुझे अपने घर में प्रवेश करने दो। उन दोनों ने कहा : अभी आपकी कुछ आयु शेष है, जो पूरी नहीं हुई है। यदि वह पूरी हो गई होती, तो आप अपने घर में प्रवेश कर सकते थे।
"

[सह़ीह़] [इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।]

http://www.sunnah.global/hadeeth/hi/show/6604